हर दिन, हर पल 'मदर्स डे'

"माँ" कैसा कोमलतम, गहन नाद से भरा शब्द है मानो साधक आद्याशक्ति को पुकार रहा है। माँ की स्वयंभूसत्ता खिंच रही है; स्नेह से आलोड़ित हुई जा रही है वह! वही स्नेह शिशु के रोम–रोम को पोषण दे रहा है यह पोषक शक्ति मिलती रहे इसीलिए ईश्वर, देश, नदी, मिट्टी को हमने माँ माना ! 'त्वमेव माता' कहना इसी बात का तो प्रतीक है। भारत माता, गंगा माँ, वतन की मिट्टी माँ इसी भाव के तो विस्तार हैं। उसके तन से स्नेह की धारें जो फूटती हैं! परंतु जहाँ शिशु का अलग कक्ष बनता है, किशोर होते–होते कठोर दुनिया में उसे धकेल दिया जाता है, वहाँ 'माँ' शब्द का उच्चारण और उससे स्वतः प्राप्त पोषण इतना अपर्याप्त होता है कि उन्हें 'मदर्स डे' मनाने की आवश्यकता आ पड़ी ताकि साल भर खोई ऊर्जा की भरपाई माँ का एक दुर्लभ आलिंगन करदे। मनाने दीजिए उन्हें 'मदर्स डे' ! अपना तो हर पल 'मदर्स डे' है! माँ को समर्पित ! उसके अपूर्व वात्सल्य से नहाया हुआ! जन कल्याण में जीवन होम देने वाली लगभग सभी हस्तियाँ माँ के स्नेहिल अंचल की ऊर्जा से ही वह पुनीत कार्य कर सकीं चाहे पौराणिक काल में बालक ध्रुव हों या मध्य काल में मराठा साम्राज्य की नींव डालने वाले शिवाजी हों अथवा भारत की सामाजिक आर्थिक स्वतंत्रता के महास्तंभ सरपदमपत जी सिंहानिया हों।

माता जीजाबाई की तरह सरसाहब की माता रामप्यारी जी ने उन्हें पल प्रतिपल गढ़ा था। आयु के आधे भाग से भी कम में वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर घर–गृहस्थी के भी समय को केवल और केवल तपस्या में बिताकर ! सबसे नजदीक का उदाहरण ही हमारे 'सीजन्ड मन' को छू पाता है। माता रामप्यारी जी ने अपना ऐश्वर्य भवन 'गंगा कुटीर' त्याग दिया। ठाकुर जी के सानिध्य में जे. के. मंदिर के प्रांगण में फलाहार, भूमिशयन, गंगाजलपान और नामजप में प्रतिपल उन्होंने साँस–साँस समर्पित कर दी। दान, सदाव्रत तो नित्य नियम था ही । पर सेवा जनकल्याण रूपी अमूल्य धन से बैंक भर गई! वही करूणा जप–तप–त्याग परदुखकातरता बच्चों पर बरस गई उत्तराधिकारी को सम्पत्ति मिलना स्वाभाविक नियम है ही अतः पौत्र श्री गोविन्द हरि जी सिहांनिया परपौत्र श्री अभिषेक जी सिंहानिया उस अमृत जल में स्नान कर उन्हीं पावन परम्पराओं के मूर्त रूप बने। देखा, हर पल 'मदर्स डे' का अमोघ प्रभाव !

–000–